लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला – 82

मधुसूदनसरस्वतीप्रणीतम्

अद्वैतरत्नरक्षणम्

प्रधानसम्पादकः
प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री
कुलपतिः

सटिप्पणानुवादः
अनुवादिका
डॉ. (श्रीमती) आनन्दमयीमहेन्द्रमालू

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

विषयानुक्रमणिका

पुरोवाक् : प्रो. पी.एन्. शास्त्री		*iii*
आत्मनिवेदन : आनन्दमयीमहेन्द्र मालू		*v*
भूमिका		*vii*
श्री मधूसूदन सरस्वती का संक्षिप्त परिचय		*xiv*

अद्वैतरत्नरक्षणम्

	विषय	पृष्ठ संख्या
	उपक्रम	
1.	शास्त्र के आरम्भ का कारण	1–9
2.	श्रुतियों के प्रामाण्य में हेतु	9–19
3.	श्रुतियों की भेदपरता का खण्डन	20–54
4.	समस्त बुद्धियों द्वारा भेद को विषय करने का खण्डन	54–63
5.	अन्योन्याभाव (भेद) के निर्वचन का खण्डन	63–84
6.	निर्विकल्पक (ज्ञान) की भेदविषयता का खण्डन	84–91
7.	भिन्न आदि (अभिन्न, भिन्नाभिन्न) में रहने के विकल्प से भेद की यथार्थता का खण्डन	91–110
8.	स्व से विशिष्ट में, स्व की वृत्ति (स्थिति) मानने पर अंशतः आत्माश्रय की उपपत्तिः	111–125
9.	विशिष्ट में रहने पर सम्बन्ध की अनुपपत्ति	126–134
10.	भेद के रहने में अभेदप्रतिबन्दी का खण्डन	135–144
11.	भेदस्वरूपता का खण्डन	145–177
12.	भेद की पारमार्थिकता का खण्डन	177–179
13.	अद्वैत की ब्रह्मनिष्ठता का उपपादन	180–182
14.	अद्वैत के ब्रह्म और तद्भिन्नस्वरूपत्व का उपपादन	183–184

15.	भेद-निषेध की अनुपपत्तियाँ	185-188
16.	स्वर्गकामी को अग्निहोत्र होम करना चाहिए इत्यादि वाक्यों का अद्वैत में ही पर्यवसान होता है (यागादि कर्मप्रतिपादक वाक्यों का अद्वैत में पर्यवसान)	188-192
17.	सबका ऐक्य होने पर भी तीन सत्ता मानने से सभी व्यवहार की उपपत्ति; व्यावहारिकत्व-निर्वचन के असंभव होने की शंका और उसका परिहार (त्रिविधसत्ता स्वीकार से व्यवहार की उपपत्ति तथा व्यावहारिकत्व का निर्वचन)	193-202
18.	श्रुति-स्मृति-इतिहास आदि के द्वारा अविद्या के स्वरूप का समर्थन	203-216
19.	भ्रममात्र का विषय होना, बाधित होना इत्यादि रूप से व्यावहारिकत्व के स्वरूप का विवेक (व्यावहारिकत्व-स्वरूप-विवेक)	216-250
20.	प्रपञ्च के सत्यसिद्ध करने वाले अनुमान का खण्डन (प्रपञ्चसत्यत्वसाधक अनुमान का खण्डन)	215-265
21.	भ्रमस्थल में तादात्म्यारोप एवं संसर्गारोप	266-313
22.	प्रमास्वरूप विचार	313-369
23.	स्वतः प्रामाण्यवाद	369-395
24.	प्रपञ्चमिथ्यात्वसिद्धि	395-434
25.	एकात्मवाद	435-456
26.	अद्वैतवादी का द्वैतवादी (नैयायिक) के प्रति उपदेश	457-464
27.	'तत्त्वमसि'-महावाक्य विचार	464-470
28.	जगत्कारणत्व विचार	470-481
29.	शब्दापरोक्षत्ववाद	481-493
30.	मुक्तिविचार	493-505
31.	ग्रन्थ-समाप्ति	505

परिशिष्ट

(क) संकेत सूची 509

(ख) मूलग्रन्थ प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दकोश 512

(ग) मूलग्रन्थ प्रयुक्त न्याय एवं नियम कोश 520

(घ) मूलग्रन्थ प्रयुक्त उद्धरणों की मूलस्थाननिर्देशसहित सूची 524

(च) मूलग्रन्थ उद्धरित श्रुति-वाक्यों का मूलस्थान निर्देश 529

(छ) सहायक ग्रन्थ सूची

i) मूलग्रन्थ 533

ii) सन्दर्भग्रन्थ 534

✦✦✦